मृत्यु का भय निरर्थक है

अनिश्चितता, असुरक्षा, बहुत ज्यादा दुर्घटनाओं की संभावनाएँ और रोगों की संभावनाओं के बीच जीता हुआ आज का इंसान अनेक प्रकार के डर (Phobia) की पीड़ा सहन कर रहा है। इसमें भी व्यक्ति को सब से बड़ा अगर कोई भय हो तो वह है, मृत्यु का भय। इसका मूल कारण यह है कि वह अधिकतर ऐसा मानता है कि मृत्यु के साथ ही उसका तथा उसके जीवन का अंत हो जाएगा। इस मान्यता की जड़ में हमारी संपूर्ण अज्ञानता है। हम इतनी हद तक भौतिकवादी बन गए हैं कि हम अपनी स्वयं की पहचान ही भूल गए हैं और इसीलिए ही हम ऐसे भ्रम या गलतफहमी के शिकार बने हैं।

हम हंमेशा अपने शरीर के लिए "मेरा शरीर" शब्द का प्रयोग करते हैं, परंतु यह "मेरा शरीर" कहने वाला "मैं" कौन? क्या इस प्रश्न का स्पष्ट तथा अचूक उत्तर हमारे पास है? शायद आपने श्रीमद् भगवदगीता या अन्य धर्म पुस्तकें पढ़ी हों तो आप कहेंगे कि मैं अर्थात् शरीर से भिन्न चैतन्य शक्ति आत्मा और आप शायद ऐसा भी कहेंगे कि यह आत्मा अजर, अमर, अविनाशी, शाश्वत और सनातन है, परंतु क्या इतनी समझ मृत्यु के डर को दूर करने के लिए पर्याप्त है? समग्र मृत्यु की घटना का आत्मज्ञान अथवा आध्यात्मिक ज्ञान के साथ संबंध है। जिस व्यक्ति को यह आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त है, वह व्यक्ति आध्यात्मिक रीति से जागृत है और उसका आध्यात्मिक विवेक खुला हुआ है। ऐसे व्यक्ति को मृत्यु का कोई भय हो ही नहीं सकता। मृत्यु की संकल्पना या विभावना को स्पष्ट रूप से समझने के लिए हमें अध्यात्म विज्ञान के एक महत्वपूर्ण भाग समान आत्मज्ञान की गहनता में जाना होगा। आत्मा के अस्तित्व के बारे में, उसकी शाश्वतता या सनातनता के बारे में तथा उसकी अनेक विशेषताओं के बारे में धर्मग्रंथों में बहुत कुछ लिखा गया है, परंतु उसके वैज्ञानिक अभिगम और वैज्ञानिक प्रमाण के अभाव के कारण हम इन सभी बातों को सहज रीति से स्वीकार नहीं कर सकते हैं तथा समझ भी नहीं सकते हैं | परंतु पिछले कितने दशकों में विश्व की कुछ अग्रिम युनिवर्सिटीयों में मनोविज्ञान (Psychology), परामनोविज्ञान (Parapsychology), पारभौतिक विज्ञान (Metaphysics) तथा मनोचिकित्सा विज्ञान(Psychiatry) के क्षेत्रों में किए गए संशोधनों ने आत्मज्ञान की गहराईयों को स्पष्ट रूप से खोल दिया है। इनके अलावा थियोसोफीकल सोसायटी, ब्रह्माकुमारीज़ की भगिनी संस्था "राजयोग एज्युकेशन एन्ड रीसर्च फाउन्डेशन" तथा अमेरिका स्थित "मेटासाइन्स फाउन्डेशन" जैसी कई संस्थाओं द्वारा किए गए संशोधनों में इस अध्यात्म विज्ञान (Spiritual Science) के रहस्यों को बहुत ही वैज्ञानिक तरीकों से स्पष्ट किया गया है। अभी तक की भौतिकवादी पाश्चात्य संस्कृति में ऐसा माना जाता था कि "Birth is an accident and death is certain" अर्थात् जन्म एक आकस्मिक घटना है और मृत्यु निश्चित है, परंतु विज्ञान के क्षेत्र में किए गए संशोधनों

ने उनको यह मानने पर मजबूर किया है कि जन्म के बाद जैसे मृत्यु निश्चित है, वैसे मृत्यु के बाद जन्म भी निश्चित है।

इन संशोधनों के द्वारा चेतना विज्ञान (Science of Consciousness) के जो रहस्य स्पष्ट हुए हैं उनकी समझ प्राप्त करने से कोई भी व्यक्ति मृत्यु के भय से मुक्त हो सकता है। आईए, इन रहस्यों के मुख्य पहलूओं पर दृष्टिपात करें।

- पाँच जड़ तत्वों से बने इस शरीर से भिन्न आत्मा एक अतिसूक्ष्म प्रकाश बिन्दु स्वरूप चैतन्य शक्ति है, जिसमें उसका अस्तित्व और व्यक्तित्व दोनो समाये हुए है|
- इस शरीर में आत्मा मस्तिष्क के केन्द्र बिन्दु पर बिराजमान होकर समस्त शरीर का संचालन करती है।

- आत्मा अजर, अमर, अविनाशी, शाश्वत तथा सनातन है, अनादि समय से उसका अस्तित्व है और वह अनंत तक रहेगा।
- शरीर के जीर्ण होने पर अथवा किसी कारण से बिन-उपयोगी हो जाने पर आत्मा उस शरीर को छोड़ देती है, जिस घटना के लिए "मृत्यु" शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह मृत्यु मुझ आत्मा का नहीं लेकिन मेरे शरीर का होता है।
- शरीर छोड़ने के बाद निश्चितरूप से और निर्धारित समय पे आत्मा किसी माता के गर्भ में विकसित हो रहे भ्रूण में प्रवेश करती है और निर्धारित समय में पूर्ण विकसित बच्चे के रूप में माता के गर्भ से बाहर आती है, जिसके लिए "जन्म" शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह आत्मा के नए शरीर में नए जीवन की शुरूआत है।
- आत्मा शरीर छोड़ने के बाद भी उसके व्यक्तित्व के अनेक पहलूओं, जैसे कि संस्कार, स्वभाव, अभिगम, वृत्ति, इत्यादि को साथ में ले जाती है जो उसके दूसरे नए जन्म में भी उसके विचार, वाणी तथा वर्तन द्वारा प्रत्यक्ष होते रहते हैं।
- मन, बुद्धि और व्यक्तित्व, आत्मा की तीन मुख्य क्रियात्मक शक्तियाँ अथवा सूक्ष्म इन्द्रियाँ हैं।
- इस सृष्टि नाटक के चक्र में आत्मा अनेक जन्म लेती है। शुरू के जन्मों में सतोप्रधान होती है। मध्य के कई जन्मों में रजोगुणी रहती है और चक्र के अंतिम जन्मों में तमोगुणी बनती है। सृष्टि नाटक के कल्परूपी एक चक्र में एक मनुष्य आत्मा कम से कम एक और अधिक से अधिक 84 जन्म लेती है, जिनमें वह कभी स्त्री और कभी पुरुष का चोला धारण करती है।
- आत्मा बीजरूप है, जिसका बीज मनुष्य का बीज है, इसलिए उसके सभी जन्म मनुष्य के रूप में ही होते हैं। पशु, पक्षी या अन्य योनि में जन्म लेने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। यह सिद्धांत परामनोविज्ञान में किए गए अनेक प्रयोगों द्वारा भी सिद्ध हो चुका है।
- उसके सभी जन्म कर्मों के सिद्धांत के अधीन हैं। उसके कर्मों के फल सुख या

दुःख के रूप में मनुष्य के तन द्वारा ही भोगने पड़ते हैं। संपूर्ण सुख का अनुभव, आत्मा अपने सतोगुणी जन्मों के दरमियान करती है और तमोगुणी जन्मों के दरमियान अधिकतर दुःख का अनुभव करती है।

उपर दिये गए ज्ञान बिन्दुओं की प्रेक्टिकल अनुभूति आप सहज राजयोग के अभ्यास द्वारा कर सकते हैं। चेतना के इस ज्ञान की समझ तथा राजयोग द्वारा की गई अनुभूति से हमारा आध्यात्मिक विवेक खुलता है, जो हमें मृत्यु के भय से मुक्त करता है। **प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय** विशेष रूप से इस प्रकार की शिक्षा तथा प्रशिक्षण देता है। इस विद्यालय के संपर्क से मैं भी काफी हद तक मृत्यु के भय से मुक्त हो गया हूँ।

------- 000 ------

ब्रह्माकुमार प्रफुल्लचन्द्र;

(M) +91 9825892710